

# गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार



## हिंदी विभागीय पत्रिका

भाषा केवल शब्द नहीं, बल्कि हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक पहचान का जीवंत दस्तावेज है।

राजपाल



सत्र : 2025-26

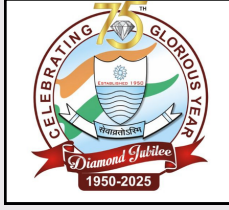
फ़रवरी, 2026

# हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 14 फ़रवरी 2026  
पौष | विक्रम संवत्-2082



संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

डॉ. वीरेंद्र

डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया

रिनु

राहुल, प्रियंका

संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय  
महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com  
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश

संपादकीय

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

यात्रा-वृत्तांत

उदयभानु "हंस" : हरियाणा की साहित्य  
साधना के अमर स्वर

विविध

साहित्य प्रश्नोत्तरी

शब्द-सम्पदा

विलोम शब्द

प्रशासनिक शब्दावली

संतराम बी.ए. : भारतीय सामाजिक

क्रांति के अग्रदूत

ग़ज़ल

पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के  
लिए भी उपयोगी



## संदेश



21 फरवरी को मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हमारे लिए केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी भाषाई विरासत को संरक्षित करने का संकल्प दिवस है। यह दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि मातृभाषा में शिक्षा से न केवल बौद्धिक विकास होता है, अपितु व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास भी सुनिश्चित होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा के महत्व को रेखांकित किया है, जो एक सराहनीय कदम है। इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की थीम 'अनेक भाषाएँ, एक भविष्य' हमें भाषाई विविधता के संरक्षण का संदेश देती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह विविधता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है, और इसे सहेजना हम सबका सामूहिक दायित्व है। इसी दिन, 21 फरवरी को हिंदी साहित्य के अप्रतिम हस्ताक्षर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जयंती भी मनाई जाती है। निराला जी ने हिंदी कविता को मुक्तछंद का वरदान दिया और साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाई। उनका संपूर्ण जीवन संघर्षों से भरा रहा, फिर भी उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। उनकी रचनाएँ आज भी हमें निर्भीकता और आत्माभिव्यक्ति की प्रेरणा देती हैं। इस अवसर पर मैं संतराम बी.ए. जी को भी स्मरण करना चाहूँगा, जिन्होंने जाति-पाति तोड़क मंडल की स्थापना कर सामाजिक समरसता का बीड़ा उठाया। उन्होंने हिंदी भाषा की सेवा और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। हमारा महाविद्यालय सदैव भाषाई विविधता और सामाजिक समरसता के इन मूल्यों को संरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध है। मैं सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से आह्वान करता हूँ कि वे अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व की भावना रखें और निराला जी के शब्दों में कहें तो - "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है", हमें भी अपनी अभिव्यक्ति को मुक्त और निर्भीक बनाना होगा।

आइए, इस अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हम सब मिलकर 'अनेक भाषाएँ, एक भविष्य' के संकल्प को साकार करें और अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचाएं।

प्राचार्य  
डॉ विवेक कुमार सैनी



## संपादकीय

### भाषा, समाज और अस्मिता का संगम

21 फरवरी का दिन हमारे महाविद्यालय के लिए दोहरे महत्व का है। एक ओर अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हमें भाषाई विविधता के संरक्षण का संकल्प दिलाता है, वहीं दूसरी ओर हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख स्तंभ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जयंती हमारे साहित्यिक चेतना को नवजीवन प्रदान करती है।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की उत्पत्ति 1952 में बांग्लादेश के भाषा आंदोलन के शहीदों की स्मृति से जुड़ी है, जब छात्रों ने अपनी मातृभाषा बांग्ला के लिए प्राणों का बलिदान दिया था। यह दिवस हमें स्मरण कराता है कि मातृभाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक चिंतन और सामूहिक अस्मिता की वाहक है। यूनेस्को ने 1999 में इस दिवस की घोषणा कर भाषाई विविधता और बहुभाषावाद को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

इसी दिन जन्मे निराला ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। 'जूही की कली', 'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज स्मृति' जैसी रचनाओं से हिंदी को समृद्ध करने वाले निराला ने कभी अपनी मातृभाषा का मोह नहीं छोड़ा। उनकी रचनाओं में सामाजिक विषमताओं के विरुद्ध विद्रोह और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का स्वर मुखरित हुआ।

इस अवसर पर हम संतराम बी.ए. जैसे समाज सुधारक को भी याद करते हैं, जिन्होंने जाति-पाति की बेड़ियों को तोड़ने के लिए 'जाति-पाति तोड़क मंडल' की स्थापना की और भाषा के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश फैलाया।

यह दोहरा उत्सव हमें यह चिंतन करने का अवसर देता है कि कैसे भाषा और साहित्य सामाजिक परिवर्तन के शक्तिशाली माध्यम बन सकते हैं। आज आवश्यकता है कि हम अपनी मातृभाषाओं को संरक्षित करें, उन्हें सम्मान दें और निराला के साहित्यिक आदर्शों को आत्मसात कर एक समतामूलक समाज के निर्माण में योगदान दें।

संपादक



## गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

**भर्तु नाथ (अथवा) भरथरी (अथवा) भतृहरि**

नाथ सिद्धों की बानियों में संगृहीत भरथरी द्वारा रचित सप्त संघ ग्रंथ में निरंजन, निरालंभ कथन, माया का त्याग, संतोष, पवन-निरोध, गुरु कृपा और निद्रा त्यागने से योगी निरोगी होकर ब्रह्म में लीन हो जाना बताया गया है क्योंकि

सप्त संत का जाण मेव, सोइ होइ निरंजन देव ।

सप्त संत भणत भरथरी जोगी, थिर होइ कंथ काया होई निरोगी ॥

गुरु के वचन को प्रमाण मानने वाला सदा सुखी रहता है। श्रंकार नहीं करना चाहिए।" आशा-त्रिष्णा के त्यागने से मन स्थिर होता है। कनक कामनी और विलास से दूर रहना चाहिए। पवन साधना करनी चाहिए तथा समस्त विकारों को छोड़ देना चाहिए। मोह माया और काया का त्याग करना चाहिए तथा वाद-विवाद में नहीं लिप्त होना चाहिए।" जीव हत्या का इन्होंने विरोध किया है तथा शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की शुचिता पर बल दिया है।

इन की दृष्टि में जरा ही इस शरीर का सबसे बड़ा शत्रु है। जो योगी नहीं होता वह जरा से ग्रस्त हो जाता है तथा सामान्य व्यक्तियों की तरह मृत्यु को प्राप्त होता है।"

चौरंगी नाथ - तिब्बती परम्परा के अनुसार चौरंगीनाथ गोरखनाथ के गुरुभाई माने गए हैं। इनके द्वारा रचित एक पुस्तक प्राणसंकली का संपादन डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथ सिद्धों की बानियों में किया है। तनजूर में चौरंगिया के नाम से 'तत्वभावनोपदेश' नामक एक रचना मिली है, जो चौरंगीनाथ द्वारा रचित मानी जाती है।

प्राण संकली के प्रारंभ में इन्होंने अपने परिवार, गुरु आदि का वर्णन किया है-

'साल बाहन घरे हमारा जनम उतपति 'सोष संताप मने परभेव सनमुष देषीला श्रीमछंद्रनाथ गुरुदेव" । शरीर में सप्त नदियों और सप्त समुद्र की कल्पना भी इनकी प्राण-संकली में मिलती है-

जिभ्या दष्षण पासै गंगा बसै, जिभ्या बामे पासै जमुना बसे,

मध्य जिभ्या सरस्वती बसै, पवन नाड़ी नरबदा बसै ॥ ८०॥

धनिनाड़ी-गोदावरी बसै, मेर मध्य देव नदी बसै, मूत्र नाड़ी

गोमती बसै, इति शरीर मध्ये सप्त सलिता बसै ॥

इन्होंने पराया दुःख अपना समझने," सोच समझ कर बोलने," गुरु महिमा" और मन साधन का विस्तृत वर्णन अपनी रचनाओं में किया है।

श्री नाथाष्टक' में इन्होंने गुरुओं की वन्दना की है।" इनकी रचनाओं की भाषा अपभ्रंश मिश्रित पूर्वी, राजस्थानी तथा पंजाबी है जो इनकी भ्रमण वृत्ति की परिचायक है।

प्राणसंकली का अर्थ यह है कि प्राण एक प्रकार की रक्षा करने वाली शू'खला है जिसका ज्ञान पिंड ज्ञान से होता है जिससे बाहर और भीतर की भ्रान्तियाँ नष्ट हो जाती हैं।" इसका मूल सिद्धान्त है 'जो ब्रह्मांड में है वही पिंड में है।" इसकी सिद्धि के लिए इसी शरीर में त्रिभुवन, चतुर्दश लोक, दस वायु, त्रिवेणी, अष्टगिरि, सप्त सरिता, सप्त समुद्र, रातदिन, पंचतीर्थ, पंचभूत, पचीस प्रकृति, चार खानि, विभिन्न नदियाँ, सप्तवार, नवग्रह, सत्ताईस नक्षत्र, चार वेद, चार युग, विभिन्न चक्र, दो पक्ष भादि सब विभिन्न रूपों में निवास करते हैं। इस प्रकार प्राण-संकली शरीर विचार अथवा पिंडविचार है जिसमें प्राण तत्त्व प्रधान है। अतः इन्होंने प्राण को शू'खला के रूप में स्वीकार किया है जिससे यह शरीर नियन्त्रण में रह सके।

वरपट माथ श्रथवा चर्पटीनाथ

चर्पटीनाथ की रचनाएँ डॉ० मोहन सिंह की पुस्तक गोरखनाथ एण्ड मिडिवल हिन्दू मिस्टिसिज्म के परिशिष्ट, डॉ० कल्याणी मालिक की रचना सिद्ध सिद्धान्त पद्धति एण्ड अदर बक्से आव नाथ योगीज, डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थवाल की रचना योग प्रवाह तथा नाथ सिद्धों की बानियाँ (संपादक डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी) में संकलित की गई हैं। चपेट मंजरी नाम से इनकी रचनाओं का एक शतक गोरख टिल्ला योग प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने भी प्रकाशित किया है।

इनकी रचनाओं का मुख्य स्वर बाह्य श्राडंवरों का खण्डन, योगी का स्वरूप, नारी निन्दा," योग अभ्यास तथा रसायन विद्या" है। इनके अनुसार सभी रिश्ते-नाते झूठे हैं क्योंकि -  
किसका बेटा किसकी बहू, आप सवारथ मिलिया सहू। जेता फूल तेता काल, चरपट कहे ए संऊ आल जंजाल ॥"

## गुरु गोरखनाथ के पद

इकीस ब्रह्माण्ड भाठी चिगावै पीवत सदा मतवालं। मनसा कलालिनि भरि भरि देवै आछा मदनां प्यालं ॥ टेक ॥ अमृत दाखी भाठी भरिया ता मध्ये गुड़ झकोल्या। मन महुआ तन धाहुवा बनासपति अठारह मोल्या ॥ भ्रमर गुफा में मन थरि ध्यानै बैस्या आसण बाली। चेतन रावलि यह भर छाक्या जुग जुग लाग्यो ताली ॥ त्रिकुटी संगम कूपा भरिया मद निपज्या अपारं। कुसमल होता ते झड़ि पड़िया रहि गया तहाँ तत सारं ॥ एवहाँ मद श्री गोरख केवट्या बंदत मछिंद्र ना पूता। जिनि केवट्या तिनि भरि भरि पीया, अमर भया अवधूता ॥

साधक द्वारा अमृत पाने की साधना को शराब बनाने की प्रक्रिया से तुलना करते हुए गोरख कहता है- सूक्ष्म चक्र (इक्कीस ब्रह्माण्ड) भट्टी है, साधक इसमें अमृत रस आस्वित करके उसे सदा पीता है और मतवाला हो जाता है। कलाली की तरह साधक की इच्छा बढ़िया मद का प्याला भर कर देती है। जैसे शराब बनाने में मीठी दाख भट्टी में भरते हैं और उसमें गुड़ मिला देते हैं, इसी प्रकार साधक अपनी साधना की भट्टी में महुए के स्थान पर मन, धाय के फूल की जगह शरीर और अठारह वनस्पति की बजाए दस इन्द्रियों और आठ चक्रों को समर्पित कर देता है। फिर वह भ्रमर गुहा में मन स्थिर करके ध्यान लगाता है और दृढ आसन लगाए बैठा रहता है। चेतन राजा, इस प्रकार प्राप्त किए अमृत से तृप्त हो जाता है और युग-युग तक समाधि लगाए रहता है। त्रिकुटी (ललाट) में तीन नाड़ियों के संगम से अमृत का कूप भर जाता है और अपार नशा (आनन्द) उपजता है जो कुछ मल (कर्मों के संस्कार) था, वह झड़ जाता है, केवल सार तत्त्व शेष रहता है। मच्छन्दर का पुत्र गोरख कहता है कि मैंने यह मदिरा आस्वित कर ली और भी जिसने इसे आस्वित किया, वह अवधूत इसे पीकर अमर हो गया।



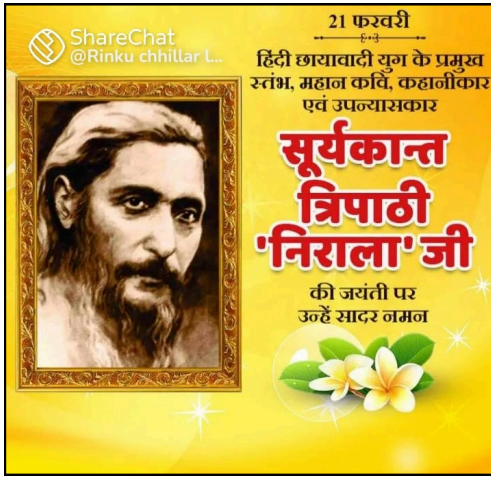
## रंगों का उत्सव: सूरजकुंड मेले में एक दिन (यात्रा-वृत्तांत)

पिछले सप्ताह की बात है, तारीख थी 3 फरवरी 2026। ठंडी हवाओं की सिहरन और सुबह की नीली रोशनी में हिसार की सड़कों पर एक अलग ही उमंग थी। महाविद्यालय की ओर से मिला यह अवसर मेरे लिए किसी उपहार से कम नहीं था – हरियाणा के फरीदाबाद में आयोजित विश्व प्रसिद्ध सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेले का 39वां संस्करण। मन में उत्सुकता और आँखों में सपने सजाए, मैं और मेरी दो सहेलियाँ भोर की पहली किरण से भी पहले घर से निकल पड़े।

महाविद्यालय पहुँचकर लगा, मानो चहकते पंछियों का झुंड एकत्र हो रहा हो। अध्यापिकाएँ हों या छात्राएँ, सबके चेहरे पर एक जैसी चमक थी। ठीक प्रातः 5:10 बजे हमारी बस सूरजकुंड की ओर चल पड़ी। उस वक्त मौसम ने ऐसा साथ दिया कि यात्रा स्वयं में एक कविता बन गई। तेज़, मगर सुहानी हवा के झोंके जब चारों ओर से आते, तो लगता जैसे प्रकृति स्वयं हमारा स्वागत कर रही है। बस के भीतर गूँजते गीतों और थिरकते कदमों ने पाँच घंटे की इस यात्रा को पलों में बदल कर रख दिया। लगभग ग्यारह बजे जब हम फरीदाबाद पहुँचे, तो शीतल हवा की ठंडक और मेले की रौनक ने हमें अपने आगोश में ले लिया। बस से उतरते ही जैसे हम किसी और ही दुनिया में प्रवेश कर गए। प्रवेश द्वार पर सजी झोंकियाँ और हस्तनिर्मित कलाकृतियाँ देखकर लगा, मानो सम्पूर्ण भारतवर्ष अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत संजोए एक छोटे से कैनवास पर उतर आया हो। इस वर्ष मेले की शोभा थी, भारत की हस्तशिल्प कला। हर ओर बिखरा सौंदर्य आँखों को सुकून दे रहा था। जैसे-जैसे हम मेले के भीतर गहरे उतरते गए, अलग-अलग राज्यों की झलकियाँ एक सूत्र में पिरोती चली गईं। कहीं उत्तराखंड की ऊनी टोपियाँ तो कहीं गुजरात के चटकीले दुपट्टे; कहीं मिट्टी के सुगंधित दीये तो कहीं पीतल के चमकीले बर्तन। हर दुकान एक कहानी कह रही थी, हर शिल्पी अपनी माटी का गीत गा रहा था। केवल भारत ही नहीं, विदेशों से आए कलाकारों और पर्यटकों ने इस मिलन समारोह को और भी व्यापक बना दिया था। उनकी दुकानों में सजे विदेशी शिल्प और उनकी मुस्कुराती आँखें बता रही थीं कि कला की कोई सीमा नहीं होती। मेले का एक कोना लोक कलाओं के नाम था। मंच पर हो रहे लोकनृत्यों की मुद्राएँ और हवा में तैरते लोकगीतों के स्वर वातावरण को पूरी तरह से भाव-विभोर कर रहे थे। कलाकारों के उत्साह और दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट से वहाँ का हर कण सजीव था। इस सांस्कृतिक आनंद के बीच झूलों का आकर्षण भी कम नहीं था। रंग-बिरंगे झूलों पर झूलते हुए जब हवा में पाँव उड़ते हैं, तो लगता है मन का पंछी भी आसमान छू लेना चाहता है। मैंने और मेरी सहेलियों ने भी खूब झूला झूला और बचपन के दिनों को फिर से जी लिया। मेले की एक और विशेषता थी – यहाँ की साफ-सफाई। इतनी विशाल भीड़ के बीच भी सफाई का विशेष ध्यान रखा गया था, जो सचमुच सराहनीय था। दूसरी ओर लगे खाने के स्टालों से आती सुगंध हमें बुला रही थी। विभिन्न राज्यों के व्यंजनों ने हमारी स्वाद कलियों को तृप्त कर दिया। हर निवाला किसी पर्व से कम नहीं लगा।

सूरज ढलने लगा था और शाम की लालिमा मेले की रंगत में घुलने लगी थी। शाम 5 बजते-बजते हम सब फिर से एकत्र हो गए, मगर इस बार चेहरों पर थोड़ी उदासी भी थी। इस रंगीन दुनिया को छोड़ने की। वापस हिसार की रात भर की यात्रा में हम शायद ही सोए हों। हमारे पास अनगिनत यादें थीं, हज़ारों तस्वीरें थीं और दिल में एक अजीब सी संतुष्टि थी। यह केवल एक मेला नहीं था, यह भारत की आत्मा के दर्शन थे। सूरजकुंड की इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि कला केवल प्रदर्शन नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक सुंदर तरीका है। यह अनुभव मेरे मन के कैनवास पर एक ऐसा चित्र बना गया है, जो आजीवन धुंधला नहीं होगा।

## निशु एम ए हिंदी पूर्वार्ध



## अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस : भाषाई विविधता और सतत विकास का संकल्प भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, अपितु हमारी आत्मा की पहचान है

**-पाठकपक्ष डेस्क-**  
भाषाई विविधता का साधन नहीं होता, बल्कि वे किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक चिंतन और सामूहिक अस्मिता को बहाल करते हैं। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य विश्व की भाषाई विविधता को संरक्षित करना और मातृभाषाओं के प्रति जागरूकता फैलाना है। यह दिवस 1952 में पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) में हुए भाषा आंदोलन के शहीदों की स्मृति में मनाया जाने लगा। जब यूनेस्को ने इस दिवस को भाषाई विविधता, डिजिटल सशक्तिकरण और समावेशी शिक्षा के माध्यम से सतत विकास पर केंद्रित किया।



भारत भाषाई विविधता का अद्भुत देश है। यहाँ बोली जाने वाली भाषाएँ केवल संरक्षण के साधन ही नहीं, अपितु हजारों वर्षों की सांस्कृतिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं। वर्ष 1961 की जनगणना के अनुसार, भारत में 1,652 भाषाएँ थीं। वर्ष 1971 में यह संख्या घटकर महज 808 रह गई। यह गिरावट तब हुई, जब तकनीक का बोलबाला नहीं था। 2013 के भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण के अनुसार, विगत 50 वर्षों में

220 भाषाएँ लुप्त हो गई हैं, वहीं 197 भाषाएँ खत्म होने के कगार पर हैं। इसके अनेक कारण हैं-व्यक्तिवाद, दर्शन, उपभोक्तावाद, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव, शहरीकरण, पारंपरिक मूल्यों के प्रति घटती निष्ठा, रोजगार के साधनों के रूप में भाषाओं की घटती संभावनाएँ।

तकनीकी दौर में मातृभाषाएँ सबसे ज्यादा संकट में हैं। इसकी वजह यह है कि मातृभाषाओं को बोलना भी तकनीक से प्रभावित हो रहा है और लेखन तो पूरी तरह उसी पर निर्भर हो गया है। तकनीक की खासियत या कमी, वह बाजार के हिसाब से खुद को विकसित करती है। चूंकि कई भाषाओं का उपयोग करने वालों की संख्या इतनी कम है कि उनसे कमाई की संभावना नागण्य है, इसलिए तकनीक उनके सहज उपयोग में दिलचस्पी नहीं दिखाती। नतीजतन, मातृभाषाओं की बढ़ती संख्या लुप्त होने के कगार पर है।

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के लिए यूनेस्को ने महत्वपूर्ण थीम रखी है- 'भाषाओं का महत्व : रजत जयंती और सतत विकास'। इसका ध्येय वाक्य है

'अनेक भाषाएँ, एक भविष्य'। यूनेस्को चाहता है कि विश्व के सतत विकास में मातृभाषाओं की महत्ता को रेखांकित किया जाए। इसलिए मातृभाषाओं को बचाना और उन्हें सांस्कृतिक लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में जीवित रखना जरूरी हो जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, विश्व की 40 प्रतिशत आबादी को उस भाषा में शिक्षा का अवसर नहीं मिल रहा है, जिसे वे बोलते या समझते हैं। 'मातृभाषा व्यक्तिके सर्वांगीण विकास, सांस्कृतिक पहचान व बौद्धिक विकास का आधार है।' मातृभाषा में शिक्षा से व्यक्तिके मनोबल बढ़ता है, संज्ञानात्मक कौशल विकसित होते हैं, दूसरी भाषाएँ सीखना आसान हो जाता है, बच्चों की समझ बेहतर बनती है। दुनिया भर के शिक्षाराल्मो मानते हैं कि मातृभाषा आधारित शिक्षा समावेशी और प्रभावी होती है।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषाओं में शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। नीति के अनुसार, कम से कम पाँचवीं कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए।

यह प्रावधान न केवल बच्चों की बौद्धिक क्षमता के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि भारत की भाषाई विविधता को संरक्षित करने की दिशा में

भी एक ऐतिहासिक कदम है।

'दुनिया की हर मातृभाषा अपनी संस्कृति, परंपरा और इतिहास को संवाहक है।' इसीलिए सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भाषाई विविधता का संरक्षण बेहद जरूरी है। दुनिया भर के शिक्षा शास्त्री मानते हैं कि सांस्कृतिक संरक्षण के लिए भाषाई विविधता का संरक्षण आवश्यक है। स्थानीय भाषाएँ ज्ञान का खजाना हैं, जिन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षण आवश्यक है।

भाषाएँ केवल संवाद का साधन ही नहीं, बल्कि सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने का अहम औजार भी हैं। इसलिए जरूरी है कि भाषाओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विकसित किया जाए। मातृभाषाओं के संरक्षण और संवर्धन का कार्य सार्वजनिक संस्थानों, शैक्षणिक संस्थाओं और नागरिक समाज को मिलकर करना होगा। तभी हम 'अनेक भाषाएँ, एक भविष्य' के संकल्प को साकार कर सकते हैं।

यह हमारा सामूहिक दायित्व है कि हम अपनी मातृभाषाओं को सम्मान दें, उनका प्रचार-प्रसार करें और उन्हें आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँचाएँ।

-डॉ राजपाल, हिंदी विभागाध्यक्ष, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

## ENGLISH PHRASES WORDS

1. Spill the beans:  
He accidentally spilled the beans about the surprise party.
2. Burn the midnight oil:  
She burned the midnight oil to finish her project.
3. The ball is in your court:  
I have given you the offer, now the ball is in your court.
4. Let the cat out of the bag:  
Ravi let the cat out of the bag about our travel plan.
5. Bite the bullet:  
He decided to bite the bullet and complete the difficult task.
6. Call it a day:  
We have finished enough work, let's call it a day.
7. A drop in the ocean:  
This small help is just a drop in the ocean compared to what they need.
8. Get out of hand:  
The situation started to get out of hand during the argument.
9. Miss the boat:  
If you don't apply today, you might miss the boat.
10. Full someone's leg:  
Don't worry, I was just pulling your leg.



## उदयभानु "हंस" : हरियाणा की साहित्य साधना के अमर स्वर

हरियाणा की धरती वीरों और जुझारू किसानों की भूमि है, लेकिन इसकी मिट्टी में साहित्य और संस्कृति का जो रस बसा है, उसे शब्द देने वालों में डॉ. उदयभानु "हंस" का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आज 26 फरवरी 2026 को उनकी पुण्यतिथि पर मैं उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को नमन करते हुए इस विशेष आलेख के माध्यम से उस महान विभूति को याद कर रहा हूँ, जिसने न सिर्फ हरियाणा बल्कि पूरे हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी।

### विभाजन की त्रासदी से राज्यकवि तक का सफर

2 अगस्त 1926 को पाकिस्तान के मुजफ्फरगढ़ जिले के दायरा दीन पनाह गांव में जन्मे उदयभानु पर दोहरी संस्कृतियों का असर था। उनके पिता संस्कृत और हिंदी के विद्वान थे तो घर के आसपास का माहौल उर्दू और फारसी का। मिडिल तक उर्दू-फारसी पढ़ने के बाद उन्होंने घर पर ही हिंदी और संस्कृत का ज्ञान अर्जित किया। 1947 में देश के बंटवारे की त्रासदी ने उन्हें विस्थापित कर दिया और वे हिसार आ गए। यहां आकर उन्होंने हिंदी में एम.ए. किया और अध्यापन के क्षेत्र से जुड़कर प्रिंसिपल के पद से सेवानिवृत्त हुए।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में समान रूप से साधना करने वाले 'हंस' जी की लेखनी से गीत, मुक्तक, दोहे, गजलें और समीक्षाएं निरंतर निकलती रहीं। सन् 1943 से 1946 तक स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उनकी देशभक्ति की कविताएं युवाओं में जोश भरती थीं। लेकिन हिंदी साहित्य में उनकी सबसे बड़ी देन थी—रुबाई। उन्होंने उर्दू रुबाइयों के मूल छंद और शिल्प को हिंदी में प्रयोग करने का सर्वप्रथम सफल प्रयास किया और 1952 में प्रकाशित उनकी "हिंदी रुबाइयां" ने धूम मचा दी। इसी अमर योगदान के लिए उन्हें "रुबाई सम्राट" की उपाधि मिली।

जब 1966 में हरियाणा अस्तित्व में आया, तो नवगठित सरकार ने उदयभानु "हंस" की साहित्यिक प्रतिभा का लोहा मानते हुए उन्हें प्रदेश का प्रथम राज्य कवि (राज्य कवि) घोषित किया। यह न केवल उनकी निजी उपलब्धि थी, बल्कि हरियाणवी भाषा और संस्कृति को राष्ट्रीय पटल पर पहचान दिलाने का क्षण था।

### सृजन की गहरी परिधि

उनकी रचनाओं में संवेदना और शिल्प का अद्भुत संगम मिलता है। गीतकार के रूप में उनकी तुलना हरिवंश राय बच्चन और शिवमंगल सिंह सुमन जैसे साहित्यकारों से की जाती थी। खुद हरिवंश राय बच्चन ने कहा था कि "रुबाई की असली पहचान उन्हें हंस जी से ही मालूम हुई"। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं:

- काव्य संग्रह: संत सिपाही (गुरु गोबिंद सिंह के जीवन पर महाकाव्य), हरियाणा गौरव गाथा (प्रबंधात्मक कृति), हंस मुक्तावली, भेड़ियों के ढंग, देशन में देस हरियाणा, सख और सहनाई .
- अन्य रचनाएं: हंस उड़ा पश्चिम की ओर (यात्रा वृत्तांत), धड़कन (देशभक्ति गीत संग्रह) .

उनके महाकाव्य संत सिपाही की प्रशंसा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और रामधारी सिंह 'दिनकर' जैसे दिग्गजों ने भी की थी। वहीं, हरियाणा गौरव गाथा को हिंदी का प्रथम वृत्त-काव्य होने का गौरव प्राप्त है, जिसमें उन्होंने हरियाणा के वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास और संस्कृति का सजीव चित्रण किया है।

### सम्मान और विरासत

उन्हें 2006 में सुर पुरस्कार और 2009 में हरियाणा साहित्य रत्न सम्मान से नवाजा गया। वे चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के सचिव भी रहे। उनकी स्मृति में हर साल उदयभानु हंस पुरस्कार दिए जाते हैं, जो नए साहित्यकारों को प्रोत्साहित करते हैं।

26 फरवरी 2019 को हिसार में उन्होंने अंतिम सांस ली, लेकिन जाते-जाते वे हिंदी साहित्य को एक संदेश दे गए। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा था, "पता नहीं मेरी रुबाइयों पर कितने लोगों ने पीएचडी की, संत सिपाही महाकाव्य लिखा गया... मुझे राज्य कवि का दर्जा मिला, बस यही बहुत है, मैं संतुष्ट हूँ"।

### निष्कर्ष

डॉ. उदयभानु "हंस" न केवल हरियाणा के राज्य कवि थे, बल्कि वे हिंदी साहित्य के उस हंस थे, जिसने अपनी लेखनी से जीवन के गहरे सत्य, माटी का दर्द और संस्कृति का गौरव गाया। उनकी पुण्यतिथि पर हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लें। उन्हीं के शब्दों में--  
"कौन अब सुनाएगा, दर्द हमको माटी का,  
'प्रेमचंद' गूंगा है, लापता 'निराला' है।"

तो आओ हम सब मिलकर अपनी माटी के इस महान कवि को नमन करें और उनकी विरासत को संजोए रखें।

प्रियंका

# साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. संविधान में राजभाषा सम्बन्धी प्रावधान -
  - संविधान के भाग-२ के अनुच्छेद १२० में 'संसद की भाषा'।
  - संविधान के भाग-६ के अनुच्छेद २१० में 'राज्य की विधान सभाओं के संदर्भ में निर्देश'।
  - संविधान के भाग-१७ के अनुच्छेद-
    - (१) अनुच्छेद ३४३- संघ की राजभाषा
    - (२) अनुच्छेद ३४४ - राजभाषा के लिए संसद का आयोग और समिति।
    - (३) अनुच्छेद ३४५- राज्य की राजभाषा या राजभाषाएँ
    - (४) अनुच्छेद ३४६- एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच अथवा राज्य और संघ के बीच में संचार के लिए राजभाषा।
    - (५) अनुच्छेद ३४७- किसी राज्य के जनसमुदाय के किसी भाषा के सम्बन्ध में विशेष उपबंध विभाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा।
    - (६) अनुच्छेद ३४८ उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय में तथा अधिनियमों, विधेयकों आदि में प्रयोग की जाने वाली भाषा।
    - (७) अनुच्छेद ३४९ भाषा सम्बन्धी कुछ विधियों के अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।
    - (८) अनुच्छेद ३५० - भाषायी अल्प संख्यक वर्गों के हितों की रक्षा के लिए निर्देश।
    - (९) अनुच्छेद ३५१- हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश।
2. संविधान का कौन सा अनुच्छेद यह घोषित करता है कि देवनागरी लिपि में लिखी गई हिन्दी संघ की राजभाषा होगी? - अनुच्छेद ३४३
3. संविधान के किस अनुच्छेद में यह प्रावधान है कि शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग १५ वर्ष की अवधि तक (अर्थात् २६ जनवरी १९६५ तक) किया जाता रहेगा, ताकि इस दौरान हिन्दी शासकीय कार्यों को निष्पादित करने में सक्षम हो जाए? -अनुच्छेद ३४३

किरण रानोलिया

विभागीय पत्रिका . फ़रवरी, 2026

**शब्द-युग्म****(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)**

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

**शब्द****अर्थ**

कल	कल का दिन
कलि	कलियुग
कली	कलिका
कामुक	कामी व्यक्ति
कार्मुक	धनुष
कल्पना	कृत्रिम विचार
कलपना	दुखी रहना
कक्षा	श्रेणी
कुक्षि	कोख

**विलोम शब्द (Antonyms)**

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्व्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

**शब्द****अर्थ**

अपमान	सम्मान
अपयश	सुयश (यश)
अमर	मर्त्य
अवनि	अंबर
अरुचि	सुरुचि
अवरोध	अनवरोध
अवशेष	निःशेष
अनुग्रह	दण्ड/कोप
अदेय	देय
अजेय	जेय
अनैक्य	ऐक्य
अवनति	उन्नति
अंतद्वंद्व	बहिर्वद्व
अचर	चर

## प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Oath of office = पद-शपथ

Objection memo = आपत्ति ज्ञापन

Obligatory = अनिवार्य बाध्यकारी

Observance = पालन

Obsolete = लुप्त/अप्रचलित

Offer = नियुक्ति प्रस्ताव

Official = शासकीय/सरकारी

Official duty = पदीय कर्तव्य

Official Language = राजभाषा

Official version = सरकारी आधिकारिक कथन

Officiate = स्थानापन्न होना

O.I.G.S. = भारत सरकार के सेवार्थ

Omission = भूल-चूक

Omitted = छोड़ा हुआ

On deputation = प्रतिनियुक्ति पर

On probation = परिवीक्षाधीन

Onus = भार/दायित्व

Operation = प्रवर्तन

Order, Standing = स्थायी आदेश

Out of date = गतावधिक/पुराना

Outfit allowance = परिधान भत्ता

Outright = पूर्ण/पूर्ण रूप से

Outstanding = बकाया

Overage = अधिक आयु

Overdue = पुराना बाकी

Overhead Charge = ऊपरी खर्च

Overtime = अतिरिक्त समय

Pact = समझौता

Pagination = पृष्ठसंख्या डालना

Party = पक्षकार

Passage = मार्ग/गली

Patent = पेटेंट/एकस्व



## संतराम बी.ए. : भारतीय सामाजिक क्रांति के अग्रदूत

भारतीय सामाजिक क्रांति के इतिहास में कई ऐसे नाम हैं जो गुमनामी के अंधेरे में खो गए, किंतु उनकी विरासत आज भी हमें समानता और मानवता का पाठ पढ़ाती है। ऐसे ही महानायक थे संतराम बी.ए. , एक समाज सुधारक, प्रखर चिंतक और साहित्यकार, जिनका जीवन जाति-प्रथा के विरुद्ध संघर्ष और समतामूलक समाज के निर्माण के लिए समर्पित रहा। उनकी जयंती (14 फरवरी) पर हम उस विराट व्यक्तित्व को नमन करते हैं, जिन्होंने बिना किसी लाग-लपेट के सामाजिक बुराइयों की जड़ पर कुठाराघात किया .

14 फरवरी, 1887 को पंजाब के होशियारपुर जिले के डेरा बस्सी गांव में एक संपन्न कुम्हार (प्रजापति) परिवार में जन्मे संतराम को बचपन में ही जाति के कटु अनुभव हुए । अम्बाला में पढ़ाई के दौरान सहपाठियों द्वारा 'कुम्हार' कहकर चिढ़ाया जाना उनके मन में जातिवाद के खिलाफ विद्रोह की चिंगारी बन गया । 1909 में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बी.ए. पास करने के बाद वे 'संतराम बी.ए.' के नाम से विख्यात हुए और यह पहचान उनके नाम के साथ जाति न जोड़ने के उनके सिद्धांत का प्रतीक बन गई ।

प्रारंभ में स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर वे आर्य समाज से जुड़े, परंतु जल्द ही उन्होंने समाज में व्याप्त पाखंड और वर्ण-व्यवस्था की सच्चाई को समझ लिया। उनका मानना था कि जब तक जन्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था समाप्त नहीं होगी, अछूतपन और जातिवाद मिट नहीं सकता । इसी क्रांतिकारी सोच के साथ उन्होंने 1922 में भाई परमानन्द के साथ मिलकर 'जाति-पाति तोड़क मंडल' की स्थापना की, जिसने सैकड़ों अंतर्जातीय विवाह कराकर सामाजिक समरसता की नींव रखी ।

संतराम बी.ए. न केवल एक क्रियाशील कार्यकर्ता थे, वरन् एक सशक्त लेखक और पत्रकार भी थे। उन्होंने 'क्रांति', 'युगान्तर', 'उषा' और 'भारती' जैसी पत्रिकाओं का संपादन कर बहुजन चेतना को नई दिशा दी । उनका लेखन इतना प्रभावशाली था कि उनकी पुस्तक 'काम-कुंज' का संपादन स्वयं प्रेमचंद ने किया था । उनकी आत्मकथा 'मेरे जीवन के अनुभव' और पुस्तक 'हमारा समाज' आज भी सामाजिक विषमताओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं ।

उनके जीवन की सबसे चर्चित घटना है 1936 में लाहौर में 'जाति-पाति तोड़क मंडल' के अधिवेशन के लिए डॉ. भीमराव आंबेडकर का आमंत्रण। यह वह ऐतिहासिक अवसर था जब डॉ. आंबेडकर ने अपना प्रसिद्ध भाषण 'जातिभेद का विनाश' (Annihilation of Caste) लिखा था। यद्यपि आर्य समाजी नेताओं के विरोध के कारण यह भाषण मंच से नहीं दिया जा सका, परंतु संतराम बी.ए. ने इस भाषण का हिंदी अनुवाद अपनी पत्रिका 'क्रांति' में प्रकाशित कर देश के युवाओं को जातिवाद के खिलाफ जागृत किया ।

आज संतराम बी.ए. को भारतीय सामाजिक क्रांति का अग्रदूत इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने उस दौर में जाति-प्रथा और पाखंड के खिलाफ आवाज उठाई, जब ऐसा करना सामाजिक बहिष्कार का कारण बन सकता था। 31 मई, 1988 को 101 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ, लेकिन उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उनका जीवन-दर्शन हमें सिखाता है कि सच्ची क्रांति सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना से ही संभव है । उनकी जयंती पर हम उनके दिखाए मार्ग पर चलने का संकल्प लें।

## गज़ल



तेरी वफ़ाएँ ही मेरे लिए अब सज़ा बनी,  
तेरा ही फ़र्ज़ मेरी रूह में जैसे दगा बनी।

किस दिल से पूछूँ मैं कि तुझसे नफ़रत करूँ,  
किस दिल से चाहूँ तुझे—ये कैसी खता बनी।

रातों की नींदें तू लेकर कहाँ चला गया,  
तेरी कमी भी मेरे लिए एक दवा बनी।

ज़ख्मों को सीने में छुपा कर मुस्कुराता हूँ,  
ये इश्क़ क्या था जो मेरे लिए क़ज़ा बनी।

हर मोड़ पर तेरी यादें मुझे रोक लेती हैं,  
ज़िंदगी भी तेरे बिना कैसी सज़ा बनी।

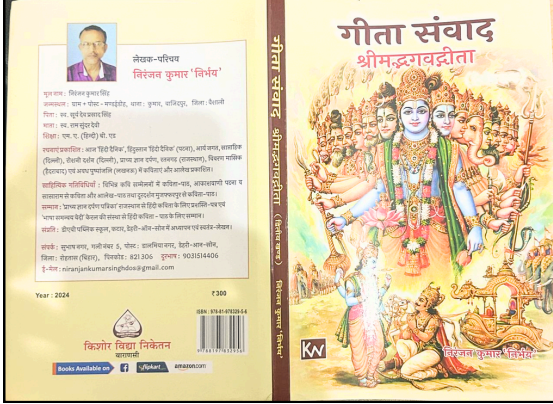
तुझसे मेरी फ़ितरत न बदल पाई आज तक,  
दुनिया की नज़र में मोहब्बत भी खता बनी।

चलते-चलते 'दिल' ने यही सीख दी मुझे—  
कभी-कभी दूरी ही रिश्तों की वफ़ा बनी।

'राज़' ये इश्क़ की राह भी अद्भुत रही—  
कभी खता बनी, कभी मेरी दुआ बनी।

(डॉ. आर. पी. राज)

## पुस्तक समीक्षा



लेखक: निरंजन कुमार 'निर्भय'

पुस्तक: "गीता संवाद श्रीमद्भगवद्गीता"

मूल्य: ₹300.00

पृष्ठ: 106

विधा- पद्यानुवाद

किशोर विद्या निकेतन वाराणसी

प्रस्तुत पुस्तक गीता संवाद 'श्रीमद्भगवद्गीता' वैश्विक एवं कालजयी महिमा का उद्घोष करते हुए उसे केवल एक धर्मग्रंथ नहीं, अपितु मानवता के कल्याण का मार्गदर्शक सिद्ध करता है। गीता को उपनिषदों का सार और भक्ति, ज्ञान एवं कर्म की अद्भुत त्रिवेणी कहा गया है। यह ग्रंथ जीवन के द्वंद्वों के बीच स्थितप्रज्ञ रहकर निष्काम भाव से कर्तव्य-पालन की प्रेरणा देता है। लेखक ने गीता के उस सनातन सत्य को रेखांकित किया है कि यह केवल युद्ध-स्थल का संवाद न होकर मनुष्य के अंतर्मन में चल रहे आसुरी (कौरव) एवं दैवी (पांडव) गुणों के संघर्ष का प्रतीक है। इस समीक्षा का केंद्र बिंदु निरंजन कुमार 'निर्भय' द्वारा रचित श्रीमद्भगवद्गीता का पद्यानुवाद है। कवि ने इस गूढ़ ग्रंथ को सरल, सरस एवं आकर्षक पद्य-शैली में प्रस्तुत करके अत्यंत सराहनीय कार्य किया है। प्रथम अध्याय में धृतराष्ट्र-संजय संवाद को जिस प्रकार माला में पिरोए मोतियों की तरह शब्दों से सजाया गया है, वह कवि की नवोन्मेष प्रतिभा का परिचायक है। द्वितीय अध्याय से लेकर अठारहवें अध्याय तक अर्जुन-श्रीकृष्ण संवाद के माध्यम से धर्म के गूढ़ रहस्यों को रोचक बनाए रखना उनकी सफलता है।

पुस्तक में गीता के कुछ मूल श्लोकों को उद्धृत कर उनका सटीक अर्थ समझाया गया है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते...' का संदेश स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि गीता भाग्य को कोसने या निष्क्रिय बैठने की शिक्षा नहीं देती, बल्कि कर्तव्य-पथ पर आरूढ़ रहते हुए फल की आसक्ति त्यागने की प्रेरणा देती है। साथ ही, गीता के अध्ययन के सार्वभौम अधिकार को रेखांकित करने के लिए श्लोक मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽप स्युः पापयोनयः।स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥ का उल्लेख किया गया है, जिसमें स्वयं श्रीकृष्ण ने स्त्री, शूद्र एवं पापयोनि को भी शरणागति द्वारा परमगति का अधिकारी बताया है। लेखक ने गीता की व्यापकता को रेखांकित करते हुए बताया कि यह केवल पूजा-पाठ की पुस्तक नहीं, अपितु जीवन प्रबंधन, राजनीति, योग, अध्यात्म और राष्ट्र-निर्माण का मार्गदर्शक ग्रंथ है। इसमें सृष्टि से लेकर मोक्ष तक का विवेचन है। निरंजन कुमार 'निर्भय' का यह प्रयास इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि उन्होंने इस ज्ञान-सागर को आम जन की भाषा में उपलब्ध कराकर नवयुवकों एवं विद्वानों सभी के चिंतन-मनन में सहायता प्रदान की है। अंततः, यह पद्यानुवाद गीता के उस शाश्वत सत्य को जन-जन तक पहुंचाने का सफल माध्यम बनकर उभरा है, जो मानव को अहंकार-रहित होकर सत्-चित्-आनंद के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय के जीवन को समर्पित है जो लघु गीता का कार्य करेगी। ऐसी सारगर्भित पुस्तक बालक से लेकर बुजुर्गों तक, विद्यार्थियों शोधार्थियों व शिक्षाविदों का मार्गदर्शन करेगी। ऐसी पुस्तक स्कूल स्तर से लेकर विश्वविद्यालय तक के पाठ्यक्रम में शामिल होनी चाहिये।

### समीक्षक

डॉ राजपाल  
हिंदी-विभाग